किसी भी शासन की सफलता के लिए नितान्त आवश्यक होता है। इस ओर सरकार को ध्यान देना चाहिए। मुझे आशा है कि सरकार इन चीजों की ओर अवश्य ध्यान देगी।

माननीय वित्त मंत्री को मैं इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने शराब पर टैक्स लगाया है। उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं लेकिन मैं उनसे यह अवश्य चाहूंगा कि पोस्टकार्ड पर क़ीमत उन्हें नहीं बढ़ानी चाहिए और मैं आशा करता हूं कि वह पुनः इस पर विचार करेंगे और पोस्टकार्ड की क़ीमत केवल 5 पैसे कर देने की कृपा करेंगे।

DR. MELKOTE (Hyderabad) : I congratulate the hon. Finance Minister for the excellent budget which he has presented before the House and for having created confidence in the country.

MR. DEPUTY-SPEAKER : He may resume his speech tomorrow.

18.29 Hrs.

CORRECTION OF ANSWER TO S. Q. No. 111 RE-STUDY OF HINDI IN SCHOOLS IN MADRAS

THE MINISTER OF EDUCATION (DR. TRIGUNA SEN) : In reply to a Starred Question No. 111 by Sarvashri K. N. Pandey, Rabi Ray, Kanwarlal Gupta, R. S. Vidyarthi, Ram Gopal Shalwala, N. S. Sharma, Jugal Mondal, C. K. Bhattacharyya, Mohsin and Deo Rao Patil, answered in this Sabha on 16th February, 1968, my colleague Shri Bhagwat Jha Azad had stated that no official intimation regarding the Resolution on three-language formula passed by the Madras Legislative Assembly had been received in the Government of India. It has later been found that a copy of such a Resolution had been received. The matter is under consideration of the Government. I regret the inconvenience to the Honourable House.

Sir, I give my sincere apologies for the incorrect reply given to the question earlier.

18.30 Hrs.

*STUDY OF HINDI IN SCHOOLS IN MADRAS

श्री शिव कुमार शास्त्री (अलीगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, जैसा अभी माननीय शिक्षा मंत्री जी ने कहा प्रश्न 16 फरवरी को यहां पर मद्रास में जो अनिवार्य हिन्दी शिक्षा के सम्बन्ध में घोषणा की गई थी उसके विषय में पूछा गया था, और उसका जो उत्तर दिया गया था वह वस्तुतः बहुत ही असन्तोषजनक था। अब उन्होंने स्पष्टीकरण कर दिया है, इससे थोड़ी-सी शान्ति प्राप्त हुई है। वास्तव में यह घोषणा इस प्रकार की थी जिसने सारे देश में एक खलबली मचा दी थी, और केन्द्र का अनुशासन और नियन्त्रण कितना शिथिल है कि उस की भावना के विपरीत एक प्रान्त ने अपना सर उठा कर इस प्रकार की घोषणा कर दी है, यह प्रश्न उसकी प्रतिक्रिया थी।

स्वराज्य आन्दोलन के समय में ही राज्य भाषा का यह प्रश्न लगभग निर्णीत हो चुका था और उस समय पर महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की थी, और उस समय पर प्रसिद्ध नेता, जो आज भी संसार में हैं, श्री राजगोपालाचार्य ने अपने भाषण में इस सभा की स्थापना के समय हिन्दी का नाम स्वराज्य भाषा रखने का प्रस्ताव किया था और कहा था कि यही एक भाषा है जिसके आधार पर हम अपने स्वराज्य की लड़ाई लड़ रहे हैं। जो यह दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा स्थापित हुई थी उसने वहां पर हिन्दी प्रचार में बहुत ही उपयोगी कार्य किया, जिसकी थोड़ी सी जानकारी मैं इस सभा को देना चाहता हूं, और वह इस प्रकार से है :

इस सभा द्वारा परिचालित परीक्षाओं में गत पांच वर्षों में 32 हजार से लेकर 35 हजार तक छात्र सम्मिलित होते रहे हैं। सन् 1967 में 25,509 छात्र, मद्रास शहर के अतिरिक्त, इन परीक्षाओं में सम्मिलित हुए, और अकेले मद्रास शहर से 7,273 छात्र इस की परीक्षा में सम्मिलित हुए। और इसमें भी यह बात उल्लेखनीय है कि महिलाओं की संख्या इन

---

*Half-An-Hour Discussion.